दिनांक 12 जनवरी, 2018 को स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय युवा विकास संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

आज युगद्रष्टा परम श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में उनकी जयंती को युवा दिवस के रूप में पूरे उत्साह तथा उमंग के साथ मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम मैं स्वामी विवेकानन्द जी को नमन करती हूँ और उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ।

आज परम श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के अवसर पर मैं उनके सन्दर्भ में कुछ कहना चाहूँगी। स्वामी जी केवल एक महान संत ही नहीं थे, बल्कि वे एक महान देशभक्त, विचारक, युगद्रष्टा, वक्ता, लेखक और मानव–कल्याण के प्रेमी थे। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्रोत भी बने।...

... गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था कि "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक नहीं।''

स्वामी विवेकानन्द जी से संबंधित एक छोटी सी बात मैं कहना चाहती हूँ। आप लोग **9/11 (Nine Eleven)** के बारे में जानते होंगे और अधिकांश लोगों का मन **9/11** का अर्थ सिर्फ अमेरिका के **World Trade Centre** के दो टॉवर की ओर जाता है। आज से करीब सवा सौ वर्ष पूर्व **1893** में **9/11** को कुछ ऐसी घटना घटी थी, जिसमें भारत का एक दूत अपने संबोधन से विश्वपटल पर छा गया था। शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द जी का ओजस्वी संबोधन "अमेरिका के मेरे भाइयों एवं बहनों''– ये शब्द पूरे सम्मेलन को तालियों के गड़गड़ाहट में देर तक गूँजाता रहा।...

... आज हम सभी उसी महान भारत के महान संतान की स्मृति में आयोजित इस सभा में सम्मिलित हैं।

स्वामी विवेकान्द जी युवाओं के सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे। वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करें, उनका चरित्र निर्माण करें, उनमें समाज सेवा की भावना विकसित करें तथा जो शेर जैसा साहस पैदा करें। उनके कथन– ''उठो, जागो और तब तक न रूको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाय'' युवाओं में नव संचार की भावना प्रबल करता है। स्वामी जी व्यवहारिक शिक्षा के पक्षधर थे और इसे मानव के लिए उपयोगी मानते थे। उनका कहना था व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है। स्वामी जी के शब्दों में, ''तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यवहारिक **(Practical)** बनना पड़ेगा।'' वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे युवाओं का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास हो।...

... शिक्षा ऐसी हो जिससे मानव के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा वे आत्मनिर्भर बने। वे बालक–बालिकाओं के समान शिक्षा के पक्षधर थे। उनका कहना था गुरू–शिष्य संबंध मधुर होना चाहिये। वे कहते थे कि सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जाय। उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था पर ध्यान दिये जाने पर भी बल दिया।

आज भारत राष्ट्र के पास एक विशाल मानव सम्पदा है, जिसमें युवाओं की संख्या अधिसंख्य है। इस युवा आबादी में निहित प्रतिभा को विकसित कर एवं उनके कौशल विकास पर ध्यान देकर आर्थिक व सामाजिक विकास किया जा सकता है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री महोदय युवाओं के कौशल विकास हेतु अत्यंत गंभीर है और इस निमित्त योजना संचालित है।...

...सबके सहयोग से एवं इस योजना के व्यापक प्रचार–प्रसार से अधिक–से–अधिक युवाओं को रोजगार से जोड़ा जा सकता है। हमारे युवा स्वामी विवेकानन्द जी के दिखाये मार्ग पर चले। हमारे युवा मेधावी है, उनमें दक्षता है, बस जरूरत है उन्हें सही दिशा प्रदान करने की। उन्होंने अपनी कौशल से राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। इस परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द जी के दिखाये मार्ग पर चलकर सभी नेकी की राह अपनाये तथा राष्ट्र को और तेज गति से समृद्ध बनाने में अपनी भागदारी अदा करें।

जय हिन्द!　　जय झारखण्ड!